

**Original Article**

**इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन : अल्मा कबूतरी के संदर्भ में**

अर्चना कुमारी

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा, बिहार

Manuscript ID:

yrj-140223

ISSN: 2277-7911

Impact Factor - 5.958

Volume 14

Issue 2

April-May-June 2025

Pp. 184-191

Submitted: 03 June 2025

Revised: 18 June 2025

Accepted: 26 June 2025

Published: 30 June 2025

Corresponding Author:

अर्चना कुमारी

Quick Response Code:



Web. <https://yra.ijaar.co.in/>



DOI:

10.5281/zenodo.21239110

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21239110>

**सारांश:**

इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श ने साहित्यिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की है। मुख्यधारा के साहित्य में लंबे समय तक आदिवासी समाज की उपेक्षा होती रही, किंतु समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन, उनकी संस्कृति, संघर्ष, अस्मिता तथा अस्तित्व के प्रश्न प्रमुखता से उभरकर सामने आए हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण, विकास परियोजनाओं, विस्थापन तथा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण आदिवासी समुदाय अनेक नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में हिन्दी उपन्यासों ने आदिवासी जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, उनकी सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संघर्ष तथा मानवीय अधिकारों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है।

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास अल्मा कबूतरी कबूतरा जनजाति के जीवन-संघर्ष, सामाजिक बहिष्कार, स्त्री-शोषण, जातिगत उत्पीड़न तथा सम्मानपूर्ण जीवन की आकांक्षा का अत्यंत सशक्त दस्तावेज़ है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने उस जनजातीय समुदाय की त्रासदी को उजागर किया है जिसे समाज ने लंबे समय तक अपराधी, असभ्य और हाशिए का समुदाय मानकर उपेक्षित रखा। उपन्यास की नायिका अल्मा केवल एक पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील आदिवासी स्त्री की चेतना, आत्मसम्मान और प्रतिरोध की प्रतीक बनकर उभरती है। उसके माध्यम से शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय तथा स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में अल्मा कबूतरी के आधार पर इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से आदिवासी समाज की सामाजिक संरचना, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपराएँ, स्त्री जीवन, लैंगिक एवं जातिगत शोषण, सामाजिक

बहिष्कार, शिक्षा, अस्मिता-बोध तथा प्रतिरोध की चेतना का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही यह शोध-पत्र इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि समकालीन हिन्दी उपन्यास आदिवासी समाज को केवल सहानुभूति का विषय नहीं मानते, बल्कि उन्हें समान अधिकार, गरिमा और न्याय के साथ देखने की दृष्टि विकसित करते हैं। इस प्रकार अल्मा कबूतरी आदिवासी जीवन के यथार्थ, संघर्ष और परिवर्तनशील चेतना का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ सिद्ध होता है।

**प्रमुख शब्द :** आदिवासी विमर्श, अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, कबूतरा जनजाति, आदिवासी जीवन, स्त्री अस्मिता, सामाजिक बहिष्कार, सांस्कृतिक पहचान, प्रतिरोध, समकालीन हिन्दी उपन्यास।



Creative Commons



*Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)*

*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

**How to cite this article:**

अर्चना कुमारी (2025) इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन : अल्मा कबूतरी के संदर्भ में. *Young Researcher*, 14(2), 184-191. <https://doi.org/10.5281/zenodo.21239110>

## भूमिका:

भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक, भाषिक एवं सामाजिक विविधताओं के कारण विश्व में विशिष्ट पहचान रखता है। इस विविधता का एक महत्वपूर्ण अंग आदिवासी समुदाय है, जिसकी जीवन-शैली प्रकृति के साथ गहरे सामंजस्य पर आधारित रही है। जल, जंगल और जमीन से उनका संबंध केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना और जीवन-दर्शन का आधार है। आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट लोक-संस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोकविश्वासों तथा सामुदायिक जीवन-मूल्यों के कारण भारतीय सभ्यता की अमूल्य धरोहर माना जाता है। इसके बावजूद आधुनिक विकास की

अवधारणा, औद्योगीकरण, नगरीकरण, खनन परियोजनाओं, वन कानूनों तथा सामाजिक-राजनीतिक उपेक्षा के कारण आदिवासी समुदाय निरंतर विस्थापन, आर्थिक विषमता, सामाजिक बहिष्कार और सांस्कृतिक संकट का सामना करता रहा है।

हिन्दी साहित्य में लंबे समय तक आदिवासी जीवन हाशिये पर रहा, किंतु इक्कीसवीं शताब्दी में आदिवासी विमर्श के प्रभाव से साहित्यकारों ने आदिवासी समाज के यथार्थ को संवेदनशील और आलोचनात्मक दृष्टि से चित्रित करना आरम्भ किया। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन केवल लोक-संस्कृति या प्राकृतिक परिवेश का चित्रण नहीं है, बल्कि वह

सामाजिक न्याय, मानवीय अधिकार, सांस्कृतिक अस्मिता, लैंगिक समानता तथा अस्तित्व के प्रश्नों से गहराई से जुड़ा हुआ है। इन उपन्यासों में आदिवासी समाज की समस्याओं, संघर्षों तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

इसी संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का *अल्मा कबूतरी* अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास कबूतरा जनजाति के सामाजिक जीवन, आर्थिक अभाव, जातिगत भेदभाव, स्त्री-शोषण तथा सम्मानपूर्ण जीवन के संघर्ष को अत्यंत मार्मिकता और यथार्थपरकता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास की नायिका अल्मा केवल एक स्त्री पात्र नहीं, बल्कि पूरे उपेक्षित समुदाय की चेतना, संघर्ष और आत्मसम्मान की प्रतिनिधि है। लेखिका ने उसके माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक परिवर्तन तभी संभव है, जब हाशिए पर स्थित समुदाय अपने अधिकारों, अस्मिता और सम्मान के प्रति सजग होकर प्रतिरोध की राह अपनाए। इस दृष्टि से *अल्मा कबूतरी* समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन और स्त्री विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ है।

#### अल्मा कबूतरी : उपन्यास का परिचय:

मैत्रेयी पुष्पा का *अल्मा कबूतरी* समकालीन हिन्दी साहित्य का एक अत्यंत चर्चित और महत्त्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें कबूतरा जनजाति के सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखकर उनकी पीड़ा,

संघर्ष और अस्तित्व के प्रश्नों को अभिव्यक्ति दी गई है। यह उपन्यास केवल एक जनजाति की जीवन-कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज की उस मानसिकता का भी उद्घाटन करता है, जिसने कुछ समुदायों को लंबे समय तक अपराधी, असभ्य और सामाजिक रूप से हीन मानकर उनके प्रति पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया। इस कारण कबूतरा समुदाय सामाजिक सम्मान, शिक्षा, रोजगार और न्याय जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहा।

उपन्यास की नायिका अल्मा संघर्षशील, आत्मसम्मानि और परिवर्तनकामी स्त्री के रूप में सामने आती है। वह अपने समुदाय की सामाजिक बेड़ियों, लैंगिक भेदभाव और शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, विद्रोह और परिवर्तन की आकांक्षा का समन्वय दिखाई देता है। लेखिका ने ग्रामीण सत्ता-संरचना, जातिगत असमानता, स्त्री उत्पीड़न तथा सामाजिक विषमताओं का चित्रण अत्यंत प्रामाणिकता के साथ किया है। यही कारण है कि *अल्मा कबूतरी* केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय और स्त्रीवादी अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है।

#### आदिवासी समाज का सामाजिक यथार्थ:

*अल्मा कबूतरी* में चित्रित कबूतरा जनजाति का सामाजिक जीवन भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, जातिगत पूर्वाग्रह और सामाजिक बहिष्कार की वास्तविकता को उजागर करता है।

उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कबूतरा समुदाय को समाज संदेह, तिरस्कार और अविश्वास की दृष्टि से देखता है। उनके साथ सामान्य नागरिकों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें जन्मजात अपराधी मानकर सामाजिक जीवन से अलग-थलग रखने का प्रयास किया जाता है। इस मानसिकता के कारण वे शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासनिक सहयोग तथा न्यायिक संरक्षण जैसी मूलभूत सुविधाओं से भी पर्याप्त रूप से वंचित रह जाते हैं।

उपन्यास यह भी दर्शाता है कि सामाजिक भेदभाव केवल बाहरी व्यवहार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह व्यक्ति के आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान और मानवीय गरिमा को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करता है। कबूतरा समुदाय के लोग सम्मानजनक जीवन जीने की इच्छा रखते हैं, किंतु सामाजिक संरचना उनके विकास के अवसरों को लगातार सीमित करती रहती है। इस प्रकार *अल्मा कबूतरी* भारतीय लोकतंत्र में समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों के अधूरे क्रियान्वयन पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाता है तथा हाशिए पर स्थित समुदायों के प्रति समाज की संवेदनहीनता को उजागर करता है।

### आर्थिक संघर्ष और आजीविका:

*अल्मा कबूतरी* में कबूतरा जनजाति की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय रूप में चित्रित हुई है। आजीविका के स्थायी साधनों के अभाव, भूमि से

वंचित होने, शिक्षा की कमी तथा सामाजिक उपेक्षा के कारण यह समुदाय निरंतर आर्थिक असुरक्षा का सामना करता है। जीविकोपार्जन के लिए उन्हें अस्थायी और कम आय वाले कार्यों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे उनका जीवन निर्धनता और अभाव के चक्र में फँसा रहता है। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण वे स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक उन्नति जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते।

लेखिका यह भी संकेत करती हैं कि आर्थिक शोषण और सामाजिक शोषण एक-दूसरे के पूरक हैं। जब किसी समुदाय को सम्मानजनक रोजगार, शिक्षा और संसाधनों से वंचित कर दिया जाता है, तब उसका आर्थिक पिछड़ापन और अधिक गहरा हो जाता है। परिणामस्वरूप गरीबी केवल आर्थिक समस्या नहीं रह जाती, बल्कि वह सामाजिक अपमान, सांस्कृतिक उपेक्षा और मानवीय अधिकारों के हनन का कारण भी बनती है। *अल्मा कबूतरी* इस आर्थिक यथार्थ को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करते हुए यह संदेश देती है कि आदिवासी समुदाय का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब उन्हें समान अवसर, संसाधनों पर अधिकार और सम्मानजनक आजीविका उपलब्ध कराई जाए।

### आदिवासी स्त्री का जीवन और अस्मिता:

*अल्मा कबूतरी* का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आदिवासी स्त्री के जीवन, उसके संघर्ष और

अस्मिता का सशक्त चित्रण है। मैत्रेयी पुष्पा ने आदिवासी स्त्री को केवल पीड़ित और शोषित पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि उसे संघर्षशील, आत्मसम्मानी और परिवर्तनकारी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया है। उपन्यास की नायिका अल्मा सामाजिक रूढ़ियों, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता तथा यौन शोषण जैसी विषम परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करती है। वह परंपरागत सामाजिक बंधनों को चुनौती देते हुए अपने अस्तित्व और सम्मान की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करती है।

अल्मा का चरित्र इस तथ्य को रेखांकित करता है कि आदिवासी स्त्री का संघर्ष केवल पुरुष-प्रधान व्यवस्था के विरुद्ध नहीं है, बल्कि उस समूची सामाजिक संरचना के विरुद्ध भी है, जिसने उसे दोहरे-तिहरे शोषण का शिकार बनाया है। वह अपने जीवन के अनुभवों से यह सिद्ध करती है कि शिक्षा, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक चेतना ही स्त्री मुक्ति के वास्तविक साधन हैं। उपन्यास में अल्मा अपने समुदाय की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है और उनमें आत्मसम्मान तथा अधिकार-बोध की चेतना का संचार करती है। इस प्रकार लेखिका ने आदिवासी स्त्री को दया की पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय वाहक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

### शोषण और सत्ता की संरचना:

अल्मा कबूतरी में आदिवासी समुदाय के शोषण को केवल व्यक्तिगत स्तर की समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सत्ता-संरचना की व्यापक विफलता के रूप में चित्रित किया गया है। उपन्यास में सामंती मानसिकता, स्थानीय प्रभावशाली वर्ग, पुलिस-प्रशासन तथा राजनीतिक व्यवस्था के गठजोड़ के कारण आदिवासी समुदाय निरंतर अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बनता है। सामाजिक रूप से कमजोर होने के कारण उनकी आवाज़ को गंभीरता से नहीं सुना जाता और न्याय की संस्थाएँ भी अनेक अवसरों पर उनके अधिकारों की रक्षा करने में असफल दिखाई देती हैं।

लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि शोषण केवल आर्थिक या सामाजिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक, प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर भी सक्रिय रहता है। सत्ता के विभिन्न केंद्र आदिवासी समुदाय की असहाय स्थिति का लाभ उठाकर उनके श्रम, सम्मान और अधिकारों का निरंतर दोहन करते हैं। परिणामस्वरूप उनका जीवन असुरक्षा, भय, उपेक्षा और असमानता से घिरा रहता है। उपन्यास इस व्यवस्था की आलोचना करते हुए यह प्रश्न उठाता है कि जब न्याय व्यवस्था समाज के सबसे कमजोर वर्ग को सुरक्षा और समान अवसर प्रदान करने में असफल हो जाती है, तब लोकतंत्र की वास्तविक सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है।

### संस्कृति और परंपरा:

अल्मा कबूतरी की एक प्रमुख विशेषता कबूतरा जनजाति की सांस्कृतिक विरासत का प्रामाणिक और संवेदनशील चित्रण है। लेखिका ने उनके लोक-जीवन, रीति-रिवाजों, पारिवारिक संबंधों, सामुदायिक परंपराओं, लोकविश्वासों तथा जीवन-पद्धति को अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। इन सांस्कृतिक तत्वों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति, सामूहिकता और पारस्परिक सहयोग पर आधारित है।

उपन्यास यह भी संकेत करता है कि आधुनिकता और तथाकथित विकास की प्रक्रिया ने आदिवासी संस्कृति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। बाहरी हस्तक्षेप, सामाजिक उपेक्षा और आर्थिक दबाव के कारण उनकी पारंपरिक जीवन-शैली निरंतर संकटग्रस्त होती जा रही है। इसके बावजूद कबूतरा समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को संरक्षित रखने का सतत प्रयास करता है। लेखिका ने यह स्थापित किया है कि किसी समाज की वास्तविक पहचान उसकी सांस्कृतिक विरासत में निहित होती है और उसका संरक्षण सामाजिक न्याय तथा सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

### शिक्षा और परिवर्तन की चेतना:

उपन्यास में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, आत्मसम्मान और मुक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम

माना गया है। मैत्रेयी पुष्पा यह दर्शाती हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति में आत्मविश्वास, विवेक, अधिकार-बोध और सामाजिक चेतना विकसित करने का आधार भी है। उपन्यास की नायिका अल्मा शिक्षा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास करती है तथा उन सामाजिक बंधनों और रूढ़ियों को चुनौती देती है, जिन्होंने उसके समुदाय को लंबे समय तक हाशिए पर बनाए रखा।

अल्मा का व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा व्यक्ति को केवल आर्थिक रूप से सक्षम नहीं बनाती, बल्कि उसे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए भी प्रेरित करती है। उसके भीतर नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा परिवर्तन की आकांक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लेखिका का यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आदिवासी समाज का समग्र विकास तभी संभव है, जब शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति तक समान रूप से पहुँचे और उसे सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन बनाया जाए।

### इक्कीसवीं शताब्दी के आदिवासी विमर्श में

#### अल्मा कबूतरी का महत्त्व:

इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में अल्मा कबूतरी आदिवासी विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास केवल कबूतरा जनजाति के जीवन का दस्तावेज नहीं है, बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता,

जातिगत भेदभाव, लैंगिक उत्पीड़न, सांस्कृतिक उपेक्षा और मानवीय अधिकारों के संकट का व्यापक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने आदिवासी समुदाय को सहानुभूति का विषय बनाकर प्रस्तुत करने के स्थान पर उन्हें संघर्षशील, स्वाभिमानी और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में चित्रित किया है।

यह उपन्यास लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, स्त्री-अधिकार, मानव गरिमा, सांस्कृतिक अस्मिता तथा समान अवसर जैसे मूलभूत प्रश्नों को केंद्र में लाता है और पाठकों को आदिवासी समाज के प्रति अधिक संवेदनशील एवं मानवीय दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही यह रचना यह भी स्पष्ट करती है कि आदिवासी समुदाय का विकास केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है, बल्कि सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन, समान अवसरों की उपलब्धता तथा उनके सांस्कृतिक और मानवीय अधिकारों की स्वीकृति भी उतनी ही आवश्यक है। इस दृष्टि से *अल्मा कबूतरी* समकालीन हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श की एक प्रतिनिधि और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में स्थापित होती है।

#### निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी पुष्पा का *अल्मा कबूतरी* इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाली अत्यंत महत्त्वपूर्ण

कृति है। यह उपन्यास केवल कबूतरा जनजाति के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण भर नहीं करता, बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार, लैंगिक असमानता, सत्ता-जनित शोषण तथा मानवीय अधिकारों से जुड़े जटिल प्रश्नों को भी गहनता के साथ सामने लाता है। लेखिका ने आदिवासी समुदाय की समस्याओं का चित्रण केवल सहानुभूति के स्तर पर नहीं किया है, बल्कि उनके आत्मसम्मान, संघर्ष, अस्मिता और अधिकार-बोध को साहित्यिक संवेदना के केंद्र में स्थापित किया है।

उपन्यास की नायिका अल्मा अपने व्यक्तित्व, संघर्ष और आत्मविश्वास के माध्यम से आदिवासी स्त्री की नई पहचान का निर्माण करती है। वह यह सिद्ध करती है कि शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक चेतना और निरंतर संघर्ष के माध्यम से ही शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती दी जा सकती है। इस प्रकार *अल्मा कबूतरी* आदिवासी स्त्री की चेतना, प्रतिरोध और आत्मगौरव का सशक्त प्रतीक बनकर उभरता है। साथ ही यह उपन्यास यह भी स्पष्ट करता है कि किसी भी लोकतांत्रिक समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब समाज के सबसे उपेक्षित और वंचित वर्गों को समान अवसर, न्याय, सम्मान तथा विकास की मुख्यधारा में सहभागी बनने का अधिकार प्राप्त हो।

इक्कीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श ने साहित्य को केवल नए कथ्य

ही नहीं दिए, बल्कि सामाजिक सरोकारों और मानवीय मूल्यों को भी नई दृष्टि प्रदान की है। *अल्मा कबूतरी* इसी परिवर्तनकारी चेतना का प्रतिनिधि उपन्यास है, जो आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संघर्ष, आर्थिक विषमताओं तथा अस्तित्व की लड़ाई को अत्यंत प्रामाणिकता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करता है। यह कृति पाठकों को आदिवासी समाज के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है तथा सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के मूल्यों को सुदृढ़ करने का संदेश देती है।

अतः कहा जा सकता है कि *अल्मा कबूतरी* केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि भारतीय समाज के हाशिए पर स्थित समुदायों के जीवन-संघर्ष, अस्मिता और अधिकारों का एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक दस्तावेज़ है। समकालीन हिन्दी साहित्य में यह उपन्यास आदिवासी विमर्श को नई वैचारिक दिशा प्रदान करते हुए सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक मूल्यों और समावेशी समाज की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इसी कारण *अल्मा कबूतरी* हिन्दी उपन्यास परंपरा में एक प्रतिनिधि, प्रासंगिक और दीर्घकालिक महत्त्व की कृति के रूप में स्थापित होती है।

### संदर्भ सूची:

1. पुष्पा, मैत्रेयी। *अल्मा कबूतरी*। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
2. गुप्ता, रमणिका। *आदिवासी साहित्य और विमर्श*। नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. मीणा, हरिराम। *आदिवासी दुनिया*। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
4. मीणा, गंगासहाय। *आदिवासी विमर्श और हिन्दी साहित्य*। जयपुर : साहित्यागार।
5. पाण्डेय, मैनेजर। *साहित्य और समाज*। नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
6. सिंह, बच्चन। *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*। नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन।
7. शुक्ल, अनुज कुमार। "कबूतरा जनजाति की संघर्ष गाथा।" *International Journal of Science and Social Science Research*.
8. शर्मा, राजेश एवं अभिषेक सिंह। "अल्मा कबूतरी उपन्यास में स्त्री की स्थिति और मुक्ति का संघर्ष।"